हरियाणा केंद्रीय विवि में एक दिवसीय संगोष्ठी

हरिभूमि न्यूज ▶▶ महेंद्रगढ़

- कश्मीर भारत का अभिन्न अंग आशुतोष भटनागर बोले
- 70 सालों से लगातार बनी हुई है कश्मीर क्षेत्र में समस्या, चर्चा से ही समाधान संभव

हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय में शुक्रवार जम्मू एवं कश्मीर एक नव-विमर्श विषय पर एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजित की गई। इस संगोष्ठी में जम्मू-कश्मीर अध्ययन केंद्र के राष्ट्रीय सचिव आशुतोष भटनागर ने कहा कि समस्या कश्मीर क्षेत्र में है और इसका समाधान तथ्यों, प्रमाणों के आधार पर चर्चा के माध्यम से संभव है। जहां तक बात कानूनी पहलू की है तो कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है और इसे कोई भी भ्रम फैलाकर भारत से अलग नहीं कर सकता है। विश्वविद्यालय के शैक्षणिक खंड -तीन में आयोजित इस संगोष्ठी में कश्मीर को लेकर विभिन्न विषयों पर विद्वानों ने अपने विचार व्यक्त किए। हिमाचल केंद्रीय विश्वविद्यालय के प्रो. बलवान गौतम ने कश्मीर को लेकर लगातार फैलाए जा रहे भ्रमों पर चर्चा की । संगोष्ठी में दिल्ली विश्वविद्यालय के शिक्षक डा. शिवपूजन पाठक ने पाक अधिकृत कश्मीर से जुड़े विषय पर अपने विचार व्यक्त किए। जम्मू-कश्मीर अध्ययन केंद्र, दिल्ली के रिसर्च फैलो प्रदीप कुमार ने कश्मीर को लेकर कानूनी व संवैधानिक स्थितियों को स्पष्ट किया। संगोष्ठी में स्कूल ऑफ सोशल साइंसेस के डीन प्रो. सतीश कुमार ने कहा कि कश्मीर के मामले को गहराई से समझा जाए। इस मौके पर डा. विनय राव , इतिहास एवं पुरातत्व विभाग के सहायक आचार्य डा. नरेंद्र परमार, डा. अभिरंजन, डा. ईश्वर परिदा व राजनीति विज्ञान विभाग के सहायक आचार्य डा. राजीव कुमार सिंह व डा. राघवेंद्र सिंह भी विद्यार्थियों के साथ उपस्थित रहे।

कश्मीर भारत का अभिन्न अंग : आशुतोष

संवाद सहयोगी, महेंद्रगढ़ : हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय में शुक्रवार को जम्मू एवं कश्मीर : एक नव-विमर्श विषय पर एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय के इतिहास एवं पुरातत्व विभाग व जम्मू-कश्मीर अध्ययन केंद्र, नई दिल्ली के सांझा प्रयासों से आयोजित इस संगोष्ठी में कश्मीर के भारत में विलय से लेकर वहां आजादी के बाद से पनपे हालातों और उनके कारणों पर विस्तार से चर्चा हुई।

इस संगोष्ठी में जम्मू-कश्मीर अध्ययन केंद्र के राष्ट्रीय सचिव आशुतोष भटनागर ने कहा कि जैसे छत्तीसगढ़ में नक्सलवाद की समस्या है, उड़ीसा में भुखमरी की समस्या है, वैसे ही कश्मीर क्षेत्र की भी अलग समस्या है। लेकिन इसका यह अर्थ कतई नहीं है कि इसे कश्मीर समस्या कहा जाए। समस्या कश्मीर क्षेत्र में है और इसका समाधान तथ्यों, प्रमाणों के आधार पर चर्चा के माध्यम से संभव है। जहां तक बात कानूनी पहलू की है तो कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है और इसे कोई भी भ्रम फैलाकर भारत से अलग नहीं कर सकता है।

विश्वविद्यालय के शैक्षणिक खंड -तीन में आयोजित इस संगोष्ठी में कश्मीर को लेकर विभिन्न विषयों पर विद्वानों ने अपने विचार व्यक्त किए। आशुतोष भटनागर ने जम्मू-कश्मीर के भारत में विलय और उसके विभिन्न हिस्सों पर पाकिस्तान व चीन के अवैध कब्जों से जुड़े विषयों पर प्रकाश डाला।

संगोष्ठी में हिमाचल केंद्रीय विश्वविद्यालय के प्रोफेसर बलवान गौतम ने कश्मीर को लेकर लगातार फैलाए जा रहे भ्रमों पर चर्चा की और बताया कि किस तरह से कानूनी पक्षों को दरकिनार कर कश्मीर को एक समस्या के तौर पर विश्व समुदाय के समक्ष पेश किया जा रहा है। संगोष्ठी में दिल्ली विश्वविद्यालय के शिक्षक डॉ. शिवपूजन पाठक ने पाक अधिकृत कश्मीर से जुड़े विषय पर अपने विचार व्यक्त किए।

कश्मीर भारत का अभिन्न अंग, इसे कोई भी अलग नहीं कर सकता

हकेंवि में 'जम्मू एवं कश्मीर : एक नव-विमर्श' पर एक दिवसीय संगोष्ठी आयोजित, वक्ता बोले-70 सालों से बनी है कश्मीर समस्या, चर्चा से ही समाधान संभव

महेंद्रगढ़ | हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय में शुक्रवार को 'जम्मू एवं कश्मीर : एक नव-विमर्श' विषय पर एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

विश्वविद्यालय के इतिहास एवं पुरातत्व विभाग व जम्मू-कश्मीर अध्ययन केंद्र नई दिल्ली के सांझा प्रयासों से आयोजित इस संगोष्ठी में कश्मीर के भारत में विलय से लेकर वहां आजादी के बाद से पनपे हालातों और उनके कारणों पर चर्चा हुई। संगोष्ठी में जम्मू-कश्मीर अध्ययन केंद्र के राष्ट्रीय सचिव आशुतोष भट्टनागर ने कहा कि जैसे छत्तीसगढ़ में नक्सलवाद की समस्या है, उड़ीसा में भुखमरी की समस्या है, वैसे ही कश्मीर की भी एक अलग समस्या है। लेकिन इसका यह अर्थ कतई नहीं है कि इसे कश्मीर समस्या कहा जाएं।

समस्या कश्मीर क्षेत्र में है और इसका समाधान तथ्यों, प्रमाणों के आधार पर चर्चा के माध्यम से संभव है। जहां तक बात कानूनी पहलू की है तो कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है और इसे कोई भी भ्रम फैलाकर भारत से अलग नहीं कर सकता है। संगोष्ठी

महेंद्रगढ़. हकेंवि में संगोष्ठी के दौरान अपने विचार रखते विशेषज्ञ।

में इतिहास एवं पुरातत्व विभाग के सहायक आचार्य डॉ. नरेंद्र परमार, डॉ. अभिरंजन, डॉ. ईश्वर परिदा व राजनीति विभाग के सहायक आचार्य डॉ. राजीव कुमार सिंह व डॉ. राघवेंद्र सिंह भी विद्यार्थियों संग उपस्थित रहे।

कश्मीर को लेकर फैलाए जा रहे भ्रमों पर की चर्चा

विश्वविद्यालय के शैक्षणिक खंड-तीन में आयोजित इस संगोष्ठी में कश्मीर को लेकर विभिन्न विषयों पर विद्वानों ने अपने विचार व्यक्त किए। संगोष्ठी में हिमाचल केंद्रीय विश्वविद्यालय के प्रो. वत्सवान गौतम ने कश्मीर को लेकर लगातार फैलाए जा रहे भ्रमों पर चर्चा की। उन्होंने बताया कि किस तरह से कानूनी पक्षों को दरकिनार कर कश्मीर को एक समस्या के तौर पर विश्व समुदाय के समक्ष पेश किया जा रहा है। इसी प्रकार दिल्ली विश्वविद्यालय के शिक्षक डॉ. शिवपूजन पाठक ने पाक अधिकृत कश्मीर से जुड़े विषय पर अपने विचार व्यक्त किए। जम्मू-कश्मीर अध्ययन केंद्र, दिल्ली के रिसर्च फेलो प्रदीप कुमार ने कश्मीर को लेकर कानूनी व संवैधानिक स्थितियों को स्पष्ट किया। उन्होंने बताया कि आजादी के समय रियासतों के राजाओं को एक निर्धारित व्यवस्था के अन्तर्गत यह स्वायत्ता थी कि भारत का हिस्सा बने या फिर पाकिस्तान का, चूंकि कश्मीर के राजा ने भारत को चुना तो इस विषय में विवाद गैर जरूरी है। संगोष्ठी में विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ सोशल साइंसेस के डीन प्रो. सतीश कुमार ने कहा कि कश्मीर की विषय में जो तस्वीर असल में पेश की जाती है वो मूल रूप वैसी नहीं है। इसलिए जरूरी है कि इस मामले को गहराई से समझा जाए। इतिहास एवं पुरातत्व विभाग के प्रमुख डॉ. विनय राव ने कहा कि यह एक ऐसा विषय है, जिसपर शैक्षणिक मोर्चे पर विमर्श जरूरी है और इसके माध्यम से ही इस कश्मीर की सही स्थिति स्पष्ट हो सकती है।